B - 4
L - 10
Indian Society

भारत में जाति - राजनीति संबंध :

समीक्षा →

पक्ष -

- जातीय आधार पर राजनीतिक दलों के निर्माण द्वारा शक्ति संतुलन स्थापित करके लोकतंत्र का विकास।
- निरक्षर जातियों को राजनीतिक जागरूकता एवं राजनीतिक सामाजीकरण द्वारा इनके राजनीतिक सहभागिता एवं मतदान व्यवहार को बढ़ाकर लोकतंत्र को मजबूती।
- राजनीतिक लाभ के लिए ही सही निम्न जातियों का सशक्तिकरण करके समतामूलक समाज के निर्माण में सहायक।
- जाति संघ एवं जाति संगठनों के निर्माण द्वारा दबाव समूह के रूप

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

में शक्ति का विकेन्द्रीकरण करके लोकतंत्र का विकास।

- निम्न एवं कमजोर जातियों के द्वारा जातीय संगठनों के माध्यम से अपने हितों की पूर्ति और सामाजिक न्याय से युक्त भारतीय समाज का निर्माण।

निश्चित रूप से भारत में जाति-राजनीति संबंधों ने दोनों तरह के परिणामों को उत्पन्न किया है। परन्तु इसके नकारात्मक परिणाम कई संदर्भों में लोकतंत्र एवं सामाजिक न्याय के लक्ष्य को दुष्प्रभावित कर रहे हैं।

परंतु यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि जाति प्रधान भारतीय समाज में जाति-राजनीति संबंधों को पूर्णत:

समाप्त करना कठिन है।

साथ ही भारतीय संविधान में भी जातीय आधारित राजनीतिक दलों के निर्माण को असंवैधानिक नहीं माना गया है इसलिए भारत में जाति- राजनीति संबंधों को पूर्णत: समाप्त करना न तो तर्क संगत है और न ही व्यवहारिक, इसलिए आवश्यक है कि जाति- राजनीति संबंधों के नकारात्मक पक्ष को समाप्त किया जाए तथा ऐसे संबंधों को स्वस्थ लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित करके इसके लाभों को प्राप्त किया जाए।

जाति को नकारात्मक संदर्भ में

प्रयोग करने वाले दलों एवं व्यक्तियों को प्रतिबंधित करके, शिक्षा के प्रसार द्वारा लोगों की सोच को तार्किक बनाकर और अधिक से अधिक नागरिक समाज का विकास करके, जाति-राजनीति संबंधों के नकारात्मक प्रभावों से बचा जा सकता है।

Q1- भारतीय समाज में राजनीति में जाति की भूमिका का परीक्षण कीजिए।

Q2- समकालीन राजनीति में जाति की बढ़ती हुई भूमिका को रोकने हेतु उपाय बताइए।

Q3- जाति व्यवस्था लोकतंत्र में बाधक है या साधक? स्पष्ट कीजिए।

KOS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR

04- "समकालीन भारतीय राजनीति में बढ़ रहे जातिवाद ने विकास को उपेक्षित किया है और लोकतंत्र को कमजोर किया है" - चर्चा कीजिए।

05- "जाति ने यदि राजनीति हेतु आधार प्रदान किया है तो राजनीति ने जाति को नवजीवन दिया है।" स्पष्ट कीजिए।

06- रीति - रिवाजों एवं परम्पराओं द्वारा तर्क को दबाने से प्रगतिविरोध उत्पन्न हुआ है। क्या आप इससे सहमत हैं?

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
KHAN SIR